18 संगति का फल

एक बहेलिया था। वह जंगल से पक्षियों को पकड़कर ले जाता और उन्हें बाज़ार में बेच देता था। इस प्रकार वह अपना जीवन-निर्वाह करता था।

एक बार दिनभर जाल बिछाने के बाद भी उसके जाल में कोई पक्षी नहीं फँसा। वह निराश होकर लौट ही रहा था कि उसकी दृष्टि एक वृक्ष पर जा पड़ी। वृक्ष पर तोतों का एक घोंसला था। तोता और तोती अपने बच्चों को दाना दे रहे थे। बहेलिए ने यह दृश्य देखा तो सोचने लगा– "यह घोंसला बहुत ऊँचा नहीं है। मैं पेड़ पर चढ़कर घोंसले में से बच्चे पकड़ सकता हूँ। ये बच्चे ही आज की मेरी कमाई होंगे।" यह सोचकर वह

पेड़ पर चढ़ गया और घोंसले में से बच्चों को पकड़कर अपने थैले में डाल लिया। तोता-तोती अपने बच्चों को बचाने की बहुत कोशिश करते रहे, पर वे बेचारे बहेलिए से उनको बचा न सके। बहेलिया उन्हें लेकर घर की ओर चल दिया।

घर जाकर उसने उन्हें पिंजरे में डाल दिया। कुछ दूध, फल और पानी खाने-पीने

को दिया। इस प्रकार रात बिता दी। सवेरा होते ही वह दोनों बच्चों को दो पिंजरों में रखकर बेचने ले चला। अपने माता-पिता से अलग हुए दोनों बच्चे दुखी तो बहुत थे पर कुछ कर भी तो नहीं सकते थे। उनमें से एक बच्चे को मंदिर के पुजारी ने खरीद लिया। बहेलिया दूसरे को लेकर आगे बढ़ा। उसे एक कसाई ने खरीद लिया। दोनों को बेचकर बहेलिया दूसरे पक्षी पकड़ने के लिए जंगल की ओर चला गया।

दोनों तोते अपने-अपने स्वामियों के पास पलने लगे। मंदिर के तोते ने कई श्लोक और दोहे सीख लिए। वह जब उन्हें बोलता था तो लोग सुनकर गद्‌गद हो जाते और तोते की प्रशंसा करते थे।

कसाई का तोता दिन-भर जो सुनता था, वही बोलता था। 'मारो, काटो, भूनो, खाओ' यही शब्द उसने रट रखे थे और इन्हें ही बोलता रहता था।

एक बार उस देश का राजा अपने सेवकों के साथ उसी स्थान पर आया, जहाँ ये तोते थे। राजा मंदिर में ज्यों ही गया, मंदिर का तोता बोला—"आइए श्रीमान! आपका स्वागत है।"

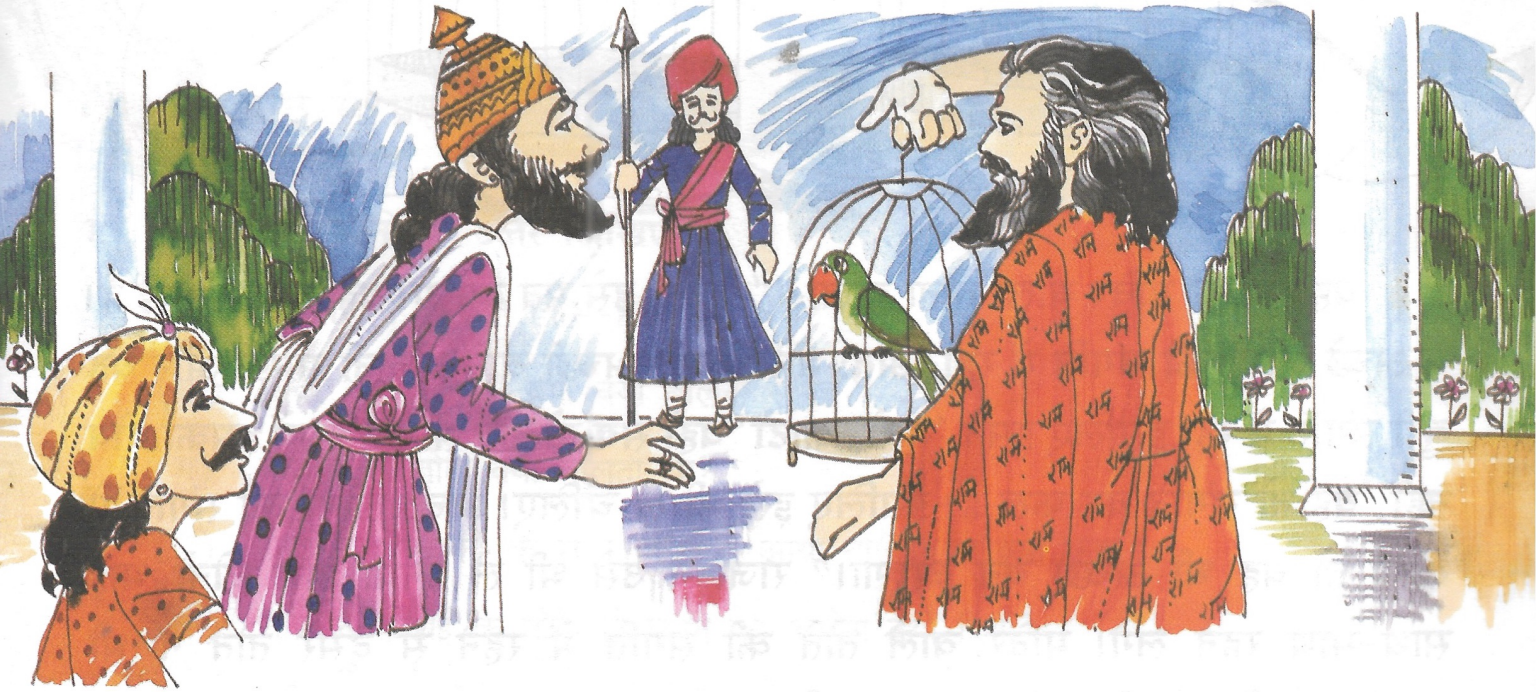

राजा ने सुना तो प्रसन्न होकर बोला—"कितना अच्छा है यह तोता!" पूजा-पाठ करने के बाद उसने पुजारी से कहा—"पुजारी जी, यह तोता हमें दे दीजिए। बदले में आप

जितना धन चाहें, ले लें।" पुजारी ने वह तोता राजा को दे दिया। राजा ने तोते के बदले में यथोचित धन दे दिया।

राजा के नौकर ने तोते का पिंजरा उठा लिया और राजा के साथ सब आगे चल पड़े। थोड़ी दूर पर जब एक कसाई की दुकान के पास से राजा और उसके सेवक निकले तो कसाई का तोता बोला–"मारो, काटो, भागने न पाए।" यह सुनकर राजा क्रोध से भर गया। उसने अपने सेवकों को आदेश दिया–"बुरा बोलने वाले कसाई के इस तोते को मार डालो।"

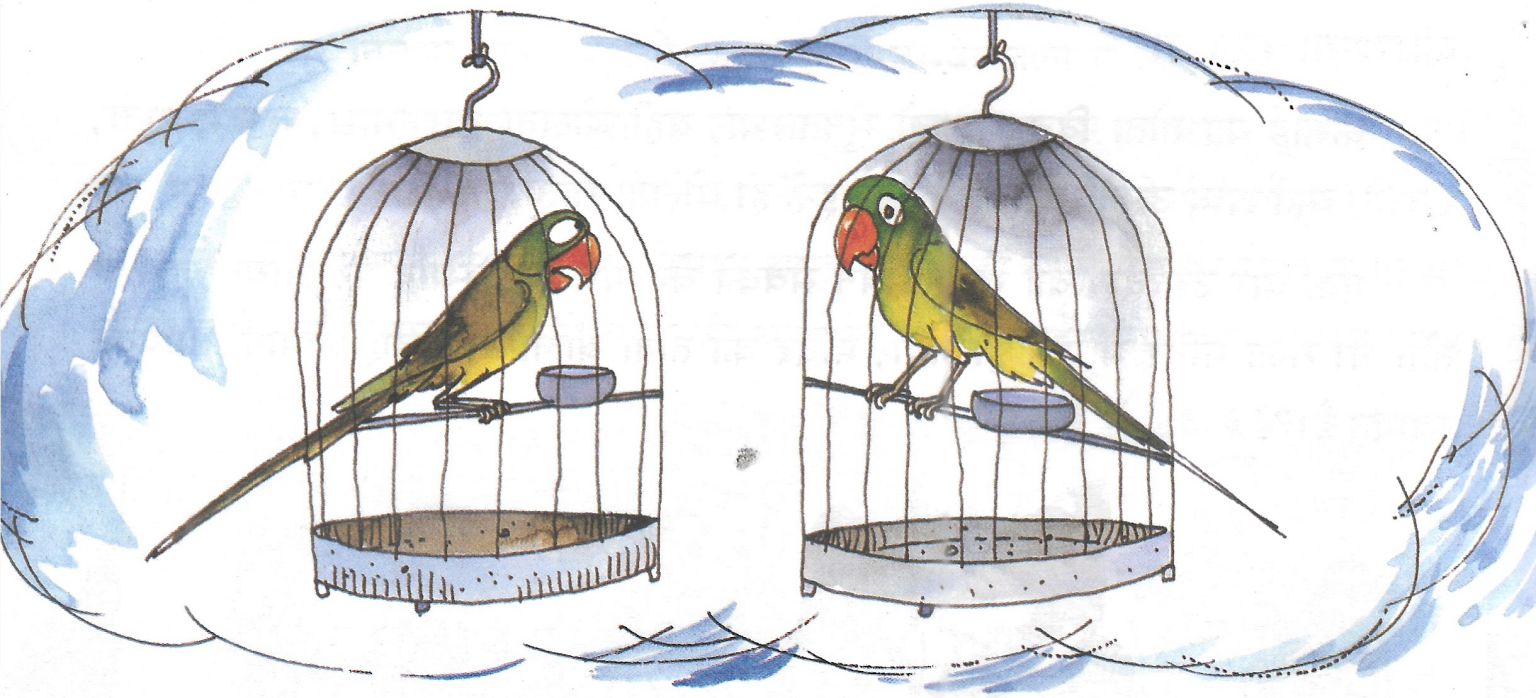

यह सुनकर मंदिर वाला तोता बोला–"राजन! इसे मत मारिए। यह तो मेरा भाई है। मैं अच्छे लोगों की संगति में रहा, अतः मैंने अच्छी-अच्छी बातें बोलनी सीखीं और यह बुरी संगति में रहा इसलिए इसने 'मारो, काटो' यही सब बोलना सीखा। इसमें इसका दोष नहीं, यह तो संगति का फल है। इसलिए इसे भी ले चलिए। अच्छे लोगों की संगति में रहेगा तो यह भी अच्छा बन जाएगा।" राजा ने उसे भी ले लिया और दोनों भाई साथ-साथ रहने लगे। मंदिर वाले तोते की संगति में रहने से दूसरे तोते ने भी अच्छी-अच्छी बातें सीख लीं।